Dr. Priti Ranjan
H. D. Jain college (Ara)
Deptt of History
B. A Part - II
paper - 3
Topic - pallavas of Political ~~Struct~~ history.

कांची के पल्लवों का एक संक्षिप्त राजनीतिक इतिहास प्रस्तुत करें ?
(550 से 897 ई०)

छठी सदी से आठवीं सदी तक प्रायद्वीप भारत के राजनैतिक इतिहास के आकर्षण का मुख्य केन्द्र कांची के पल्लवों ~~हैं~~ रहे। कांची के पल्लव वंश के विषय में प्राथमिक जानकारी हरिषेण की 'प्रयाग प्रशस्ति' एवं हेनसांग के यात्रा विवरण से मिलती है। सम्भवतः पल्लव लोग स्वतन्त्र राज्य स्थापित करने से पूर्व सातवाहनों के सामन्त थे। इनके प्रारम्भिक अभिलेख 'प्राकृत भाषा' में एवं बाद के 'संस्कृत' में मिले हैं।

सिंहवर्मन ने पल्लव वंश की नींव डाली थी जिसने तृतीय शताब्दी ई० के अन्तिम चरण में शासन किया था। विष्णुगोप तथा सिंहवर्मन के बीच की लगभग दो शताब्दियों में आठ राजाओं ने काञ्ची पर शासन किया। इन शासकों का इतिहास अत्यन्त उलझा हुआ है।

यद्यपि पल्लवों के राजनीतिक उत्कर्ष का केन्द्र काञ्ची थी, किन्तु उनका मूल निवास स्थान तोण्डमण्डलम् था। कालान्तर में उनका साम्राज्य उत्तर में पेन्नार नदी से दक्षिण में कावेरी नदी की घाटी तक विस्तृत हो गया।

इसके राजनीतिक इतिहास निम्नलिखित हैः-

सिंहविष्णु (575 से 600 ई०) के समय में पल्लव इतिहास का नया अध्याय आरम्भ हुआ। उसने चोलों को परास्त कर कावेरी के मुहाने तक अपने राज्य को विस्तृत कर लिया और चोलमण्डल की विजय के बाद ही उसने अवनि सिंह की उपाधि धारण की। यह वैष्णव धर्म का अनुयायी था। इसने कला और साहित्य को संरक्षण दिया। जिसका उदाहरण था संस्कृत के महाकवि भारवी उसके दरबार में निवास करता था।

महेन्द्रवर्मन प्रथम (600-630) पल्लव शासकों में विशिष्ट स्थान रखता है. उसके शासनकाल में पल्लव-चालुक्य तथा पल्लव-पांड्य संघर्ष का वह दौर आरम्भ हुआ, जो अगले 175 वर्षों तक चलता रहा. महेन्द्र वर्मन का समकालीन चालुक्य सम्राट पुलकेशिन द्वितीय था. उसके समय में पल्लव साम्राज्य न केवल राजनीतिक दृष्टि से बल्कि सांस्कृतिक साहित्यिक एवं कलात्मक दृष्टि से भी अपने ~~चर~~ चरमोत्कर्ष पर था।

मत्त 'मत्तविलास' 'विचित्र चित्त' 'गुणभर' आदि उपाधी धारण की थी। इसने 'मत्तविलास प्रहसन' जैसे महत्वपूर्ण ग्रंथों की रचना की। इसने चट्टानों को काटकर अनेक मंदिरों का निर्माण कराया. आरम्भ में वह जैन धर्म का अनुयायी था, बाद में शैव धर्म को मानने लगा।

नरसिंह वर्मन प्रथम (630-68 ई०) प्रथम अपने पिता महेन्द्र वर्मन की मृत्यु के बाद गद्दी पर बैठा। उसके शासन काल में भी पल्लवों का चालुक्यों से युद्ध चलता रहा. नरसिंहवर्मन ने न केवल अपनी राजधानी की ही रक्षा की, अपितु प्रत्याक्रमण करते हुए एक के बाद एक तीन युद्धों में चालुक्यों को हराकर उनकी राजधानी वातापी पर भी अधिकार कर लिया। इसी युद्ध में सम्भवत पुलकेशिन II की मृत्यु हो गई, इस विजय के उपलक्ष में नरसिंहवर्मन ने 'वातापीकोंड' की उपाधि ग्रहण की. (कूरम अभिलेख में इसकी जानकारी मिली) नरसिंहवर्मन ने लंका के एक राजकुमार मानवर्मा को अपनी सहायता देकर उसका खोया हुआ राज्य तथा प्रतिष्ठा पुनः प्राप्त करवाई जो इसकी दूसरी महत्वपूर्ण उपलब्धि थी।

'महामल्ल' होने के साथ ही नरसिंहवर्मन कला व संस्कृति का संरक्षक भी था. पल्लव स्थापत्य शैली के चट्टान काटकर बनाए जाने वाले कई मंदिरों का निर्माण उसके शासनकाल में हुआ. इसके शासन काल में चीनी यात्री ह्वेनसांग कांची गया था।

महेन्द्र वर्मन द्वितीय नरसिंह वर्मन का पुत्र एवं उत्तराधिकारी था। उसने मात्र दो वर्षों (668-70) तक शासन किया। इसके शासन काल में चारों तरफ शांति एवं समृद्धि थी।

इसके बाद परमेश्वर वर्मन प्रथम (670-95 ई०) राजा बना। नौसारी, गदावल के ताम्रपत्रों से ज्ञात होता है कि परमेश्वर वर्मन को आरम्भ में चालुक्यों के साथ युद्ध में पराजित होना पड़ा। किन्तु कुरम अभिलेख बताते हैं कि बाद में परमेश्वर वर्मन ने चालुक्यों को बुरी तरह हराकर अपनी आरम्भ की पराजय का पूरा-2 बदला ले लिया। वह एक निर्माता भी था तथा उसने मामल्लपुरम् में गणेश मंदिर का निर्माण करवाया था। वह विद्या का प्रेमी भी था।

नरसिंह

नरसिंह वर्मन द्वितीय (~~क~~ 695-720 ई०) परमेश्वर वर्मन के बाद सिंहासनारूढ़ हुआ। उसका शासनकाल तीन दृष्टियों से महत्वपूर्ण है। प्रथम इस काल में चालुक्य-पल्लव संघर्ष शान्त रहा तथा उनमें कोई बड़ा युद्ध नहीं हुआ। दूसरे, उसने चीन के साथ मैत्री सम्बन्ध स्थापित किए तथा अपना दूतमंडल चीन भेजा। तीसरे, उसके शासनकाल में मन्दिर स्थापत्य की एक नई शैली जिसे राजसिंह शैली कहते हैं विकसित हुई।

परमेश्वर वर्मन द्वितीय (720-31 ई०)

राजसिंह के उत्तराधिकारी के शासन काल का महत्व पल्लव-चालुक्य संघर्ष के पुनः आरम्भ हो जाने के लिए है, परमेश्वर वर्मन चालुक्यों के हाथों युद्ध में पराजित हुआ। ये सिंहविष्णु की परम्परा का अंतिम शासक था। इसकी मृत्यु के बाद पल्लव राजवंश में संकट की स्थिति उत्पन्न हो गई क्योंकि उनकी शाखा में कोई भी उत्तराधिकारी बनने वाला नहीं था। अतः कॉंची की जनता ने सिंहविष्णु के भाई भीमवर्मन की शाखा के व्यक्ति का, जिसका नाम नंदिवर्मन द्वितीय था (731-95 ई०) अपना शासक चुना। ~~ऐसी~~ ऐसा माना जाता है कि परमेश्वरवर्मन को चित्रमाय नामक एक पुत्र था जो की ~~बाद~~ में गद्दी से वंचित होने के कारण पाण्ड्य नरेश राजसिंह की शरण ली थी। राजसिंह ने चित्रमाय की सहायता हेतु नंदिवर्मन द्वितीय के विरुद्ध अभियान किया। जिसमें नंदिवर्मन बंदी बना लिया गया परन्तु उसके सेनापति उदयचन्द्र ने युद्ध में चित्रमाय की हत्या कर कई युद्धों में ~~पर~~ पाण्ड्यों को पराजित कर अपने स्वामी नंदिवर्मन को बंदीगृह से छुड़ा लिया। पुनः राष्ट्रकूट शासक दंतिदुर्ग से नंदिवर्मन का युद्ध हुआ जिसमे जीत ~~हुई~~ दंतिदुर्ग की हुई, लेकिन बाद में इन्होंने आपस मे संधि कर ली तथा राष्ट्रकूट नरेश ने अपनी पुत्री रेवा का विवाह नंदिवर्मन के साथ कर दिया। ~~तं~~ और इन दोनों के संयोग से दंतिवर्मन नामक पुत्र ने जन्म लिया। तंडनतोट्टम् दानपत्र से पता चलता है कि नन्दिवर्मन ने गंगराज्य पर आक्रमण कर उसके पुरी पर अधिकार कर लिया।

नन्दिवर्मन वैष्णव मतानुयायी था। उसने कला और साहित्य का भी विकास किया। जिसका उदाहरण है नंदिवर्मन द्वितीय द्वारा निर्मित कॉंची का मुक्तेश्वर मंदिर तथा बैकुण्ठ-पेरुमाल मन्दिर का निर्माण करवाया था।

दंतिवर्मन (~~821~~-847 ई०)

नंदिवर्मन एवं राजमहिषी रेवा का पुत्र दंतिवर्मन अगला पल्लव राजा बना। उसके समय में पल्लव राज्य पर राष्ट्रकूट नरेश गोविन्द तृतीय एवं पाण्ड्य शासकों ने आक्रमण किया। गोविन्द तृतीय का प्रतिरोध करने में भी दन्तिवर्मन को आंशिक सफलता ही प्राप्त हुई।

नंदिवर्मन तृतीय (847 - [illegible] ई०) दन्तिवर्मन का पुत्र एवं उत्तराधिकारी नंदिवर्मन तृतीय गद्दी पर बैठा। उसने अपने बाहुबल एवं पराक्रम से चोलों पाण्ड्यों एवं गंगों को पराजित कर पुनः एक बार पल्लव साम्राज्य को शक्ति प्रदान की। यह महान पल्लव शासकों की पंक्ति का अन्तिम पराक्रमी शासक था। उसने कावेरी क्षेत्र पर भी अपना अधिकार जमा लिया। पर इस क्षेत्र से नंदिवर्मन का कोई भी अभिलेख नहीं मिलता। बाणनरेश उसके सामन्त थे। उसने मद्रास के समीप तिरुवोत्तियूर में पार्थसारथि मन्दिर का पुनर्निर्माण करवाया था।

नृपतुंग वर्मन (870 - 79 ई०) नन्दिवर्मन तृतीय के बाद उसका पुत्र नृपतुंग वर्मन गद्दी पर बैठा। उसका शासन काल शांति का काल था। उसके शासन काल के अन्तिम दिनों में सौतेले भाई अपराजित ने विद्रोह कर दिया। विद्रोह में पाण्ड्यों ने नृपतुंग का एवं चोलों तथा पश्चिमी गंग ने अपराजित का साथ दिया। संघर्ष में नृपतुंग वर्मन पराजित हुआ।

नृपतुंग व उसके बाद अपराजित (879 - 97 ई०) यह पल्लव वंश के अन्तिम राजा थे। अन्तिम पल्लवों ने पाण्ड्य राजा श्रीमार तथा वरगुण द्वितीय को हराने में तो सफलता प्राप्त की, किन्तु चोल वंश के आदित्य प्रथम ने अपराजित को पराजित कर तमिल प्रदेश पर अधिकार कर लिया। उसके मित्र चोल नरेश आदित्य प्रथम ने उसकी हत्या कर दी तथा तोण्डमंडल का स्वामी बन बैठा।

निष्कर्ष पल्लव इतिहास का यह संक्षिप्त सर्वेक्षण उनके राजनीतिक महत्व के दो आधारों को स्पष्ट करता है. पहला आधार है प्रायद्वीप में केन्द्रीय अधिसत्ता को स्थापित करना. यह अधिसत्ता यूँ ही स्थापित नहीं हो गई थी. इसके लिए पल्लवों को लगभग 325 वर्ष तक चोल, चालुक्य, राष्ट्रकूट तथा पांड्य वंश के साथ संघर्ष करना पड़ा था. युद्धों में प्राप्त सफलता ने अधिसत्ता के क्षेत्र का विस्तार किया. लेकिन इसके साथ ही इन लगातार युद्धों ने पल्लव राज्य की शक्ति का क्षय करके उसके पतन के लिए भी जमीन तैयार की. पल्लव इतिहास के राजनीतिक महत्व का दूसरा आधार है कि उन्होंने अपने को एक समुद्री शक्ति के रूप में स्थापित किया।